भारतीय गृह्यसूत्रों में वैवाहिक परम्परा एवं विधि–विधान

अभय शंकर तिवारी

गृह्यसूत्रों में संस्कारों का वर्णन प्रधान होने पर भी अनेक सामाजिक प्रथाओं और रीति–रिवाजों के वर्णन हैं। पंच महायज्ञ, श्राद्धकर्म, आभिचारिक क्रियाओं के भी वर्णन हैं। वार्षिक कर्मों का निरूपण भी गृह्यसूत्रों में पाया जाता हैं। यथा– सर्प बलि, पृथ्वी पर शयन का आरम्भ, नये अन्नों के समय प्रयोग किये जाने वाले कर्म, अण्टका कर्म, पितृ कर्म आदि। वर्षिक कर्मों के अतिरिक्त कुछ ऐसे भी विधान गृह्यसूत्रों में वर्णित है। जैसे– घर बनाने के लिए भूमि का चुनाव, घर बनाने की विधि स्तम्भ रखने की तिथि या विधि इत्यादि। ये सभी क्रियाऐं गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित है और गृहस्थ जीवन का आधार है– **'विवाह'।**